

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए 04से 09 अगस्त, 2015 साप्ताहिक सलाह

(38 वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	जुलाई - अगस्त माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)						साप्ताहिक सलाह
	दिनांक	4	5	6	7	8	
पंजाब							
भटिंडा	2	5	0	0	8	6	इस पूरे सप्ताह बादल छाए रहेंगे। अगले दो सप्ताह 10 अगस्त के बाद वर्षा हो सकती है। इस सप्ताह सफेद मक्खी और जैसिड का प्रकोप हो सकता है। उत्तरी कपास क्षेत्र के कई भागों में कपास पर्ण कुंचन विषाणु देखा गया है। नत्र के अधिक अनुप्रयोग से बचें। इससे रस चूषक कीटों की समस्या बढ़ सकती है। दस दिनों के अंतराल में तीन बार नत्र+स्फुरद+पोटाश उर्वरक की मात्रा इस समय मृदा में देने से गूलर निर्माण में मदद मिलेगी। इसके साथ ही इस समय सफेद मक्खी और जैसिड की अधिक संख्या वृद्धि रुकने में भी मदद मिलेगी। नाशीकीट एवं रोगों का खोजी सर्वेक्षण जारी रखने की सलाह दी जाती है। फसल पर जीवाणु गलन भी आ सकता है। सिफारिश के अनुसार नाशीकीट एवं रोगों का प्रबंधन करें। कृत्रिम पायरेथाइड तथा फिप्रोनिल का छिड़काव बिल्कुल न करें। इसके स्थान पर नीम तेल आधारित कीटनाशक, डाइफेंथ्यूरोन तथा स्पिरोमेफिन के छिड़काव को प्राथमिकता दें। आकस्मिक मुरझान के लक्षण दिखाई देते ही तुरंत इसके प्रबंधन के उपाय अपनाएँ।
फिरोजपुर	3	5	0	0	6	6	
मुक्तसर	3	5	0	0	5	5	
मानसा	1	0	0	0	0	0	
हरियाणा							
सिरसा	4	0	0	0	0	0	अगस्त के पहले तीन सप्ताह बादल छाए रहेंगे। पहले सप्ताह में भारी वर्षा तथा दूसरे एवं तीसरे सप्ताह में मध्यम वर्षा की संभावना है। इस स्थिति में रस चूषक कीटों की संख्या तथा प्रकोप में कमी रहेगी। रस चूषक कीटों की संख्या को बढ़ने से रोकने के लिए उर्वरकों की मात्रा का अनुप्रयोग 2-3 बार में करें। इस समय कीटनाशकों का छिड़काव न करें। बादल छाए रहने से होने वाली कलियों की झड़न रोकने के लिए प्लानोफिक्स का छिड़काव करें।
हिसार	1	0	0	0	0	0	
फतेहाबाद	2	0	0	0	0	0	
राजस्थान							
हनुमानगढ़	1	1	0	0	0	2	अगस्त के पहले तीन सप्ताह बादल छाए रहेंगे। पहले सप्ताह में भारी वर्षा तथा दूसरे एवं तीसरे सप्ताह में मध्यम वर्षा की संभावना है। इस स्थिति में रस चूषक कीटों की संख्या तथा प्रकोप में कमी रहेगी। रस चूषक कीटों की संख्या को बढ़ने से रोकने के लिए उर्वरकों की मात्रा का अनुप्रयोग 2-3 बार में करें। इस समय कीटनाशकों का छिड़काव न करें। बादल छाए रहने से होने वाली कलियों की झड़न रोकने के लिए प्लानोफिक्स का छिड़काव करें।
श्रीगंगानगर	1	1	0	0	0	8	
बांसवाड़ा	3	2	2	4	5	6	
उड़ीसा							
कोरापुट	2	13	5	6	32	76	अगस्त के पहले तीन सप्ताह बादल छाए रहेंगे। पहले सप्ताह में भारी वर्षा तथा दूसरे एवं तीसरे सप्ताह में मध्यम वर्षा की संभावना है। इस स्थिति में रस चूषक कीटों की संख्या तथा प्रकोप में कमी रहेगी। रस चूषक कीटों की संख्या को बढ़ने से रोकने के लिए उर्वरकों की मात्रा का अनुप्रयोग 2-3 बार में करें। इस समय कीटनाशकों का छिड़काव न करें। बादल छाए रहने से होने वाली कलियों की झड़न रोकने के लिए प्लानोफिक्स का छिड़काव करें।
कालाहांडी	0	27	10	24	46	63	
बोलांगीर	1	29	8	24	36	29	
गुजरात							
अमरेली	2	0	0	0	0	0	इस सप्ताह वर्षा होने की संभावना नहीं है लेकिन अगस्त के मध्य में मध्यम वर्षा हो सकती है। खेत में भरे हुए अतिरिक्त पानी को किसान भाई निकाल दें। मिश्रित उर्वरकों की पहली मात्रा विशेष रूप से अगेती फसल में 2-3 बार में 10 दिनों के अंतराल से दें। गुलाबी सूँड़ी की कीट संख्या की सतत जानकारी लेने के लिए फीरोमोन ट्रैप (5/है) का प्रयोग करें। इससे इस सूँड़ी के प्रयोग का
भावनगर	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	1	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	1	0	0	0	0	0	

सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	2	2	आर्थिक हानि स्तर (8 पतंग प्रति ट्रेप प्रति रात्रि सतत तीन रात) का पता लग सकेगा। कपास के 5-10% गुलाबवत फूलों में गुलाबी इल्ली सहित यह भी आर्थिक हानि स्तर है। गुलाबी सूँड़ी का प्रकोप-प्रस्फोट अमरेली, बड़ोदरा, तथा भावनगर में जुलाई के पहले सप्ताह से ही देखा गया है। गुलाबवत फूलों के रूप में 10-50-% हानि बॉलगार्ड-II में रिकार्ड की गई है। किसानों को इसके लिए सिर्फ क्यूनालफास का छिडकाव करने की सलाह दी जाती है। पाईरेथाईड, स्पीनोसेड, थायोडिकार्ब का छिडकाव न करें। ऐसा करने से <i>हेलिकोवर्पा</i> , मिलीबाग तथा लाल पत्ती होने की समस्या बढ़ जाती है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास की फसल को अप्रैल-मई, 2016 तक खेत में रखने के स्थान पर दिसंबर, 2015 से जनवरी, 2016 तक समाप्त कर दें।
वडोदरा		0	0	0	3	5	
राजकोट	1	0	0	0	0	0	
भरूच	1	0	0	0	0	0	
पाटन	3	2	5	7	4	4	
सबरकांठा	4	0	0	0	0	0	
मेहसाना	2	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश							बुआई की तारीख के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में फसल 40-52 दिनों की है। अगस्त के प्रारंभ से मध्य तक बादल छाए रहेंगे और वर्षा होने की संभावना है। नत्र-स्फुरद की गई मात्रा का मृदा में अनुप्रयोग खुले मौसम में करें। उर्वरक देने का कार्य प्राथमिकता के आधार पर अन्य उपायों के साथ-साथ करें। रसचूसक कीटों के लिए कीटनाशक छिडकाव न करें।
खरगोन	2	1	1	1	0	1	
धार	3	1	1	1	3	2	
खंडवा	6	5	0	1	0	0	
महाराष्ट्र							इस सप्ताह के शुरुआती दिनों में वर्षा हो सकती है। 6-12 अगस्त के छोटे सूखाकाल के बाद फिर से वर्षा हो सकती है। लघु कलियों के निर्माण काल में बारानी कपास में मृदा में उर्वरकों का अनुप्रयोग करें। उन खेतों में जहाँ मृदा में उर्वरकों का विशेषतः यूरिया का अनुप्रयोग किया गया है वहाँ फसल में जैसिड की संख्या वृद्धि की संभावना है। इस अवस्था में यूरिया का अधिक प्रयोग करने से बचें। बारानी कपास में यदि अभी तक उर्वरों की आधार मात्रा नहीं दी गई है तो तुरंत दें। सिंचित कपास में फसल लघु कली निर्माण अवस्था में है। बारानी कपास वानस्पतिक वृद्धि अवस्था से लघु-कली निर्माण अवस्था में है। खरपतवार प्रबंधन के लिए खेती के कार्य करें। बारानी कपास में नमी संरक्षण की क्रियाएँ करें। खरपतवार प्रबंधन के लिए खरपतवारनाशकों का अंकुरण-बाद छिडकाव खुले मौसम में किया जा सकता है। फसल पर सफेद मक्खी और जैसिड का प्रकोप देखा गया है। बी.टी. रहित कपास में करडी की इल्ली को अक्सर <i>हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा</i> समझ लिया जाता है। इस समय करडी की इल्ली टेकीनिड परजीव्याभ से भारी संख्या में परजीवीकृत है। बी.टी. रहित कपास में इस कीट के नियंत्रण के लिए कोई भी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। मई के महीने में बुआई की गई गैर बी.टी. कपास में <i>हेलिकोवर्पा</i> के लिए खोजी-सर्वेक्षण करने की किसानों को सलाह दी जाती है। यदि कपास अभी तक लघु-कली निर्माण अवस्था में नहीं आई है तो इस छिडकाव की आवश्यकता नहीं है।
नागपुर	35	60	20	9	3	4	
वर्धा	15	35	7	5	0	0	
चंद्रपुर	2	75	11	8	3	3	
यवतमाल	6	25	8	3	0	0	
अमरावती	8	28	5	3	0	0	
अकोला	6	9	1	0	0	0	
बुलढाना	3	3	2	0	0	2	
परभणी	0	11	3	6	0	0	
नांदेड़	0	11	10	6	0	0	
बीड	0	8	0	3	0	3	
वासिम	2	8	2	0	0	0	
धुले	13	10	3	0	3	2	
जलगांव	3	16	10	0	0	1	
जालना	0	5	0	0	0	0	
औरंगाबाद	4	13	10	5	4	2	
तेलंगाना							
आदिलाबाद	1	8	16	0	0	3	

वारंगल	0	6	8	5	6	8	बुआई की गई फसल 5-7 पत्ती अवस्था में है। अधिक तापमान तथा अधिक पवन गति के कारण मंद फसल वृद्धि, पत्तियों के पीली और लाल पड़ जाती हैं। इस समस्या से निपटने के लिए फसल पर एक सप्ताह के अंतराल में दो बार 1.0 से 2.0 प्रतिशत पोटेशियम नायट्रेट + 1.0 प्रतिशत मैग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। मृदा में नमी पर्याप्त होने पर नत्र + पोटेश उर्वरकों का अनुप्रयोग करें। खरीफ फसल के लिए जहाँ बुआई हो चुकी है उन खेतों में किसान भाई नमी संरक्षण के लिए खेती की क्रियाएँ करें। रस चूसक कीटों के लिए, विशेषतः गैर बी.टी. कपास में व्यापक-प्रभाव वाले आर्गेनोफोस्फेट समूह अथवा निओनिकोटीनाइड समूह के कीटनाशकों का छिड़काव न करें। अगस्त के तीसरे सप्ताह में भारी वर्षा की संभावना है। रस चूसक कीटों की संख्या इस कारण स्वतः ही कम हो जाएगी। यूरिया के अधिक प्रयोग से बचें। कृत्रिम पायरेथाइड तथा फिप्रोनिल का छिड़काव किसी भी हालत में न करें। जहाँ रस चूसक कीटों की संख्या आर्थिक हानि स्तर को पार कर गई है वहाँ नीम तेल आधारित कीटनाशकों के छिड़काव को प्राथमिकता दें। जहाँ कली अवस्था अपने शीर्ष पर है वहाँ प्लानोफिक्स का फसल पर छिड़काव करें।
खम्मन	0	10	12	8	10	8	
कारिगर	0	8	16	0	3	0	
नालगोंडा	0	3	5	4	8	6	
आंध्रप्रदेश							
गुन्टूर	0	4	6	8	5	10	
प्रकासम		4	8	6	8	10	
कर्नाटक							
धारवाड़	2	7	10	6	3	2	
हवेली	1	5	8	7	4	3	
मैसूर	0	3	4	3	3	2	
तमिलनाडू							
पेरंबलुर	1	0	0	0	0	0	
सलेम	1	0	0	0	0	0	
त्रिची	0	3	0	0	0	0	
विरडुनगर	0	0	0	0	0	0	
आदर्श वर्षा							
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80		

उत्तर भारत:

- फसल अंकुरण चरण (स्टेपलिंग स्टेज) में है।
- इस ऋतु वर्ष के लिए "सी आई सी आर और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों" द्वारा सिफारिश की गई कपास की जल्दी परिपक्वहोने वाली बीटी संकर या अगतीकिस्मे पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस रोग) के लिए प्रतिरोधी थे इस वर्ष के लिए भी उन्ही किस्मों की सिफारिस की जाती है।
- कपास की देसी किस्मे पर्ण कुंचन रोग के लिए प्रतिरोधी हैं अतः उत्तर भारत के लिए देसी उन्हीं को किस्मों की जोरदार सिफारिस की जाती है।
- फसल के अवशेषों और आकार में समानकपास के पौधों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए।
- किसान को खरपतवार एवं इतसितके प्रबंधन करने की सलाह दी जाती है।
- थ्रिप्स कीटों का संक्रमण अंकुर स्तर (सीडलिंग स्टेज) पर हो सकता है, लेकिन शायद ही वे कभी आर्थिक नुकसानदेय होते हैं चूसक कीट(थ्रिप्स) के संक्रामण की नियमित निगरानी किया जाना चाहिए।
- अनावश्यक कीटनाशक स्प्रे करने से बचें।

मध्य और दक्षिण भारत:

- जरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के लिए 15 से 25 जून जन में के बीच इस सी बुवाई आदर्श

- दक्षिण भारत में बुवाई जुलाई से आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए 15
- वर्षा आधारित क्षेत्रों विशेष रूप (बोरानी) से में उच्च घनत्व रोपण प्रणालियों में लकीरें पर बुवाई सबसे अच्छा माना गया है।
- वर्षा सिंचित क्षेत्रों में, बुआई 8 से 10 से. मी. वर्षा के बाद किया जाना चाहिए।
- बीटी कपास की संकर किस्मों को या जल्दी परिपक्व वाली किस्मों को प्राथमिकता देना चाहिए।
- वर्षा आधारित क्षेत्रों में संकर बीटी कपास 90 x 10 से. मी. दूरी पर बोना चाहिए है। इन किस्मों को उच्च घनत्व रोपण प्रणाली में
- गैर बीटी किस्मों-जैसे एके सूरज (सीईसीआर), एनएच 615 (वीएन-एमएयू) परभणी, एकेएच 081 (डॉ. पीडीकेव्हीअकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेव्ही राहुरी) जल्दी परिपक्व होते हैं। इसे जून 15 से पहले बोया जाता है तो फसल बालीवर्म एवं सूखा तनाव से बच जाएगा।
- कपासकेगैर बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयोरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित करके सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना के साथसेमी 45 पंक्ति से पंक्ति दूरी तथा सेमी पौधे सेदूरी।
- पर एक के बाद एक 10 पंक्ति पर अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयोरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना की एक पंक्ति और कपास दो पंक्ति के साथ अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के खेतों की सीमा में या आसपास अरहर की 2-3 पंक्तियाँ रिफ्रिजियाके रूप में सेवा करते हैं।
- वीडिसाइड स्टोम्प 30 ईसी या बेसलीन 45ईसी 2.5 lit/हेक्टर के उपयोग खरपतवार के पूर्व उद्भवरोकने के लिए किया गया हो तो तुरंत हैरो करने से यह छिड़काव प्रभावी रहता है।
- पहली बारिश के बाद खेत खाद (फार्म यार्ड मैन्योर) या गोबर खाद 5 से 10 टन प्रति हेक्टेयर खेतों में डालना चाहिए।
- एजोटोबेक्टर और पीएसबी दोनों का 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में इस्तेमाल पोषक तत्वों के स्थिरीकरण के लिए किया जाना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड (8 ग्रा.), विटावेक्स या थिरम (3 ग्राम.) प्रति किलोग्राम बीज चूसक कीट एवं रोगोंके खिलाफ कपास की किस्मों की रक्षा करेगा।

भाकृअनुप-सीआईसीआर द्वारा सिफारिस की गयी प्रबंधन रणनीतियाँ:

नाशीकीट प्रबंधन

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

- रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी किस्मों/संकरों का चुनाव करें। रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी बीटी संकरों पर कीटनाशकों के बहुत कम छिड़कावों की आवश्यकता होती है।
- रसचूसक कीटों के भक्षक कीटों को बढ़ावा देने के लिए लोबिया या ज्वार या उड़द या सायाबीन की अंतः फसल लें।
- इमिडेक्लोप्रिड @ 7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से बीजोंपचार करें।
- विशेषतः रसचूसक कीटों के लिए सवेदन किस्मों में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग।
- फसल को खरपतवारों से मुक्त रखें और मिलिबग से ग्रस्त पौधों को धीरे-से उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- बुवाई के 30-40 दिनों व 50-60 दिनों बाद फूलकीट, मिरीड बग और दूसरे रस चूसक कीटों के पर्यावरण हितैषी नियंत्रण के लिए इमिडेक्लोप्रिड, डाइमेथोएट या एसिफेट का पौधों के तने पर या पौधों के तने पास मिट्टी में अनुप्रयोग।
- **ये ना करें:**
- फसल के पहले दो महीनों में मित्र कीटों के संरक्षण के लिए रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव को यथा संभव टालें। नैसर्गिक रूप से पाये जाने वाले लाभदायक कीट लेडी बर्ड बीटल, क्रायसोपर्ला,

जीकोरिस बग, एफिलिनस उनके शिशु व प्रौढ़, सरफीड मक्खी, मिरीड बग, मकड़ियों आदि का संरक्षण होता है। ये मित्र कीट चेंपा, जेसिड, फूलकीट, मिरीड, सफेद मक्खी तथा मिली बग का कारगर तरीके से नियंत्रण करते हैं।

- लेपिडोप्टेरा आडर के कम हानिकारक नाशिकीटों जैसे पत्ती लपेटक साइलेप्टा डेरोगेटा व अर्धकुंडलक एनोमिस फ्लेवा के लिए फसल पर छिड़काव न करें। इन कीटों की इल्लियां कपास को बहुत कम नुकसान पहुंचाती है लेकिन ट्रायकोग्रामा प्रजाति, सिसिरोपा फोरमोसा, एपेटेलिस प्रजाति जैसे परजीवियों के लिए परपोषी का कम करते हैं।
- भविष्य में चयन दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी कीटनाशक का छिड़काव ना करें।
- एसिटामीप्रिड, इमिडेक्लोप्रिड, क्लोथिएनिडिन व थायोमेथोक्वशाम जैसे निओनिकोटिनाइड समूह के कीटनाशकों का फसल पर छिड़काव करने से बचें।
- डब्ल्यूएचओ वर्ग-1 श्रेणी (अति हानिकारक श्रेणी) के कीटनाशकों जैसे फोसफेमिडान, मिथाइल पैराथिओन फोरेट, मोनोक्रोटोफास, डाइक्लोरवास, कार्बोफ्यूरान, मिथोमिल, ट्रिजोफोस, तथा मेटासिस्टोक्स का अनुप्रयोग ना करें।
- सफेद मक्खी के महाप्रकोप से बचने के लिए फिप्रोनिल तथा पायरेथ्रोइड जैसे कीटनाशकों के छिड़काव से बचें।

रसचूसक कीटों का प्रबंधन:

आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल): यदि सफेद मक्खी तथा जेसिड की हानि का स्तर आर्थिक हानि सीमा ग्रेड अर्थात निचली पतियों के मुड़ने और सिकुड़ने तथा किनारों से पीले पड़ना आदि 25% या अधिक पौधों में दिखाई दे तो नीचे दिये गए नियंत्रण उपाय अपनाए:

- अ) नीम तेल 1.0 % + नीबोलीगिरी 5.0% + 0.05-0.1 डिटर्जेंट ।
- आ) वर्टीसीलियम लेकानी @ 10 ग्राम/ प्रति लीटर पानी; अच्छे सूत्रण विश्वसनीय निर्माताओं से ही खरीदें।
- इ) डाइफेन्थियूरोन (50 % 800 ग्राम / हे.)
- ई) फ्लोनिक्वोमिड 50% 200 ग्राम / हे. या
- उ) बुप्रोफेजीन 25% 200 ग्राम/ हे

पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी प्रभावकारिता और प्रतिरोध से संबंधित कारकों को ध्यान में रखते हुए कीटनाशक जैसे डाइमेथोएट या एसिफेट या इथिओन का भी इस्तेमाल सिर्फ विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

यदि कलियाँ (स्क्वेयर) को मिरीड बग के प्रकोप का आर्थिक नुकसान दिखाई दे तो एसिफेट 75 एसपी या डाइमेथोएट @ एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

गूलर की सूंडियों का प्रबंधन:

गूलर की सूंडियों की नियन्त्रण करने में बीटी कपास प्रभावी है।

गैर बीटी कपास के लिए निम्न रणनीति की सिफारिस की जा रही है: अमेरिकन सूंडी (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) द्वारा 50% पौधों पर कलियाँ ग्रस्त होने पर इस आर्थिक हानि स्तर पर निम्न उपाय करें:

- 1) बीटी कपास के फसल पर एचएएनपीबी (HaNPB) का छिड़काव करें, इसके एक सप्ताह बाद 5% निबोली गिरी का छिड़काव करें या गूलर की सूंडियों स्पेडोप्टेरा (तम्बाखू की इल्ली) या सफेद मक्खी के नियन्त्रण के लिए आर्थिक हानि स्तर पर फोसलोन कीटनाशक का प्रयोग करें।
- 2) बुवाई के 70-80 दिनों बाद बीटी रहित कपास पर उपलब्ध होने पर ट्रायकोग्रामा का प्रयोग करें।
- 3) गूलर की सूंडियों, विशेष रूप से, हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा नियन्त्रण के लिए प्रभावी कीटनाशक निम्न हैं:
 - क) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल (कोरजेन)
 - ख) फ्लुबेनडाइमाइड (फेम)
 - ग) स्पीनोसेड

घ) इमामेक्टीन बेंजोएट तथा

ड) इंडोक्साकार्ब

ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले हैं जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त हैं।

- 4) गुलाबी सूँडी और चित्तिदार सूँडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूँडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी (WP) का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।
- 5) स्पोंडोप्टेरा लिटुरा: इस इल्ले के अंड पुंजों को हाथ से एकत्र करें या एसएनपीवी का 500 एल ई/हे. अथवा रिमोन 10 एल ई का 200 मिली अथवा लार्विन 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 6) प्ररोह घुन के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 50 ई सी का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर एसआर फसल पर छिड़काव करें।
- 7) अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा./हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें, मेढों फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बोडेजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिस होते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थैलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी : मैकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव क्रेन।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.) + कापरआक्सीक्लोराइड (1500-2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपतवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

खरपतवार उगने के बाद प्रयोग में आने वाले खरपतवारनाशक(50 से 75 ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति है. की दर से)

घासों : क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपतवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। खरपतवारनाशी (हर्बिसाइड) नवजात खरपतवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपतवारों के नियंत्रण के लिए क्लोज़ईलोफोप-इथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम, फ्लूयाजीफोप

ब्यूटाइल,का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबक ईथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपतवारों के लिए पायरीओथिबेक सोडियम कारगर है। अधिक जानकारी के लिए कृषि विश्वविद्यालयों ए तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।जलजमाव (वाटर लागिंग) प्रबंधन:

जलमग्नता प्रबंधन:

कपास की फसल अधिक पानी के लिए संवेदनशील है अधिक वर्षा के कारण देश के मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में जल मग्नता एक समस्या बन सकती है। गहरी काली मृदाओं और पानी की अच्छी निकासी न होने की स्थिति में कपास की फसल जेल जमाव से सबसे ज्यादा दुष्प्रभावित होती है। अधिक वर्षा वाली परिस्थितियों में पानी की निकासी के लिए विशेषतः काली मिट्टी वाली खेत में ढलान के साथ साथ पर्याप्त नालियाँ बनाए। बेहतर मृदा नमी संरक्षण के लिए विशेषतः जिन क्षेत्रों में मिमी 900-700 वर्षा होती है उन क्षेत्रों में मई मेढ़ बनाने वाले यंत्र या रिजर की सहायता से मेढ़व नाली बनाए। इस तकनीक और मेढ़ों पर कपास की बुवाई करने से वर्षा जल का संरक्षण होगा और अतिरिक्त जल खेत से बाहर निकाल जाएगा। यह तकनीक भारी काली मिट्टी में और अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में उपयुक्त है।

खेत के किनारों पर जल निकासी के लिए नालियाँ बनाए। इससे अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकल सकेगा। नाली-मेढ़ पद्धति (रिजेज़) में मेढ़ के ऊपर तुरंत बुवाई करने की सिफारिस की जाती है।इस पद्धति के उपयोग से भारी वर्षा का फसल पर दुष्प्रभाव नहीं होगा। जलमग्नता से यदि फसल पीली पड़ जाएतो उर्वरकोंका अनुप्रयोग करें। यदि भारी वर्षा की भविष्यवाणी की गई है तो उर्वरकों का अनुप्रयोग टाल दें जिससे सतह पर से उर्वरक बह जाने वाले नुकसान से बचा जा सके।

जलमग्नता के दुष्प्रभाव से फसल को जल्दी उबारने के लिए साप्ताहिक अंतराल में फसल पर 0.5 से 1.0 % डीपीए अथवा 19:19:19: नाइट्रोजन का घुलनशील योग छिड़काव करें।

सामान्य फसल स्वस्थ प्रबंधन :

1) स्थूल व सूक्ष्मपोषकतत्वों का प्रबंधन बेहतर करें।

मेग्नेशियम सल्फेट %0.5, यूरिया %2का फसल पर छिड़काव करें। इसके बाद %2डीपीए का छिड़काव क्राय-1 एसी की उचित अभिव्यक्ति तथा लालपत्ती रोग में कमी लाना सुनिश्चित करने के लिए इनका फसल पर छिड़काव करें। मुरझान रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तुरंत 1 % कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा बाबिस्टीन 1 % घोल से पौधों की जड़ के पास की जमीन को तर करने से क्षति पूर्ति हो सकती है।

2) लालपत्ती की रोक थाम के लिए 2 % यूरिया, 0.5 % जिंक सल्फेट तथा 2% बोरान का 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव फसल के 90 दिनों के होने पर करें।

3) कली और फूलों के धारण के लिए: प्लानोफिक्स 4.5 एसएल (एनएए) हार्मोन @ 21 पीपीएम (7 एमएल प्रति 15 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)

डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)			
वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldy@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccpkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yaladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संस्करण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

-- इति --